दृश्य 1

स्थान : खेत।

समय : सबेरे 9:30 बजे।

पात्र : साहिल-लड़का,ग्यारह साल,स्कूल यूनिफार्म पहनी है।

बेला-लड़की, ग्यारह साल, स्कूल यूनिफार्म पहनी है।

दोनों के पीठ पर बस्ते हैं।

दृश्य का विवरण : बेला और साहिल खेत में बीरबहूटियाँ खोज रहे हैं।

संवाद

साहिल : (आश्चर्य से) बेला, यहाँ बहुत बीरबहूटियाँ हैं।

बेला : (हँसकर) ठीक है। सुर्ख, मुलायम, गदबदी बीरबहूटियाँ।
धरती पर चलती फिरती खून की प्यारी-प्यारी बूंदें।

साहिल : देखो इस बीरबहुटी का रंग तुम्हारे रिबन के जैसा लाल है।
तुमने कुछ सुना बेला ?

बेला : हाँ सुना। पहली घंटी लग गई है।

साहिल : (परेशान होकर)लेकिन मुझे पेन में स्याही भरवानी है, दुकान से।

बेला : तो जल्दी चलो,देर हो जाएगी।

(दोनों चलते हैं)

"बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए।"

दुकानदार ने ऐसा क्यों कहा?

साहिल और बेला पैन में स्याही भरवाने केलिए दुकान पहुँचे। लेकिन दुकान में स्याही की बोतल खाली हो गई थी। बेला ने कहा कि साहिल ने पैन में जो स्याही बची थी उसे छिड़क दिया था। तब दुकानदार ने कहा कि बादल को देखकर घड़े को नहीं ढुलाना चाहिए। अर्थात्, किसी वस्तु को मिलने की प्रतीक्षा में अपने पास की वस्तु की उपेक्षा करना मूर्खता है।

बेला के सिर पर सफेद पट्टी देखकर साहिल परेशान हुआ। साहिल उसके पास गया। दोनों के बीच की संभावित बातचीत तौयार करें।

साहिलः तुम्हारे सिर पर क्या हो गया बेला!

बेलाः छत से गिरकर चोट लग गई।

साहिलः कब ?

बेलाः दीपावली की छुट्टियों में। बहुत दिन हो गए।

साहिलः अब दर्द है क्या ?

बेलाः नहीं,आज खेल घंटी में गाँधी चौक की बालू में लंगड़ी टाँग खेलेंगे।

साहिलः नहीं खेलेंगे। तेरे सिर में फिर से लग जाएगी तो।

बेलाः नहीं लगेगी।

साहिलः तो ठीक है, तुम्हारी मर्जी।

डायरी लिखते समय इन बिंदुओं पर ध्यान दें।

तारीख और दिन

आत्मनिष्ठ एवं प्रसंगानुकूल भाषा

संक्षिप्तता

तारीख

मैं बहुत दुखी हूँ।आज पाँचवीं का रिज़ल्ट आ गया। हम दोनों छठी में आ गए। अब हमें अलग-अलग स्कूल जाना पड़ेगा। साहिल अजमेर में पढ़ने जाएगा। वह हॉस्टल में रहेगा। मैं राजकीय कन्या पाठशाला में। साहिल की यादें ...।

साथ बीरबहूटियाँ खोजना, स्कूल जाना, पढ़ना...।

साहिल से कब मिल पाऊँगी?